रजि. नं. 144/जयपुर 2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

Swami Vivekanand Mahila Mahavidhyalaya, Roopangarh

Rai Ka Bagh, Parbatsar Road, Roopangarh, Ajmer-305814

www.svmmcollege.in

3.3.2.1 Copy of the Cover page, content page and first page of the publication indicating ISBN number and year of publication for books-chapters

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

published in national/ international conference proceedings per teacher during last five year

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Calendar Year of publication	ISBN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication	Name of the publisher
1	Miss. Vijay Laxmi Kumawat	SOUVENIR	The Vision And Goals of the National Education Policy 2020	International Conference On National Education Policy in India	International Conference On National Education Policy in India	International	2023	978-93-91777-98-2	BSN COLLEGE BAKSHAWALA, SANGANER, JAIPUR & SWAMI VIVEKANAND MAHILA MAHAVIDHYALAYA, ROOPANGARH, AJMER	Madau, bhankrota-Muhanna Link Road, Jaipur,raj.-302026
2	Miss. Vijay Laxmi Kumawat	A monthly Research journal of Multidisciplinary	Cultural hero Ram and Hindi poetry			National	Nov-23	2582-6557		Janmat Power Research Foundation & publication
3	Miss. Vijay Laxmi Kumawat	A monthly Research journal of Multidisciplinary	Satire in Munshi Premchand's fiction			National	Dec-23	2582-6557		Janmat Power Research Foundation & publication
4	Mrs. Radha Rani Tiwari	SOUVENIR	Teacher empowerment enhancing quality education delivery in the context of National Education Policy 2020	International Conference On National Education Policy in India	International Conference On National Education Policy in India	International	2023	978-93-91777-98-2	BSN COLLEGE BAKSHAWALA, SANGANER, JAIPUR & SWAMI VIVEKANAND MAHILA MAHAVIDHYALAYA, ROOPANGARH, AJMER	Madau, bhankrota-Muhanna Link Road, Jaipur,raj.-302026

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

5	Miss. Farah	SOUVENIR	Assessment Reforms: Moving towards competency based assessment in the context of the vision and goals of the National Education Policy 2020	International Conference On National Education Policy in India	International Conference On National Education Policy in India	International	2023	978-93-91777-98-2	BSN COLLEGE BAKSHAWALA, SANGANER, JAIPUR & SWAMI VIVEKANAND MAHILA MAHAVIDHYALAYA, ROOPANGARH, AJMER	Madau, bhankrota-Muhanna Link Road, Jaipur,raj.-302026
6	Dr. Hemraj Bairwa	Janmat Power National Research Journal	Concept of urban sprawl and study of its causes		National	National	2022	2582-6557		Janmat Power Research Foundation & publication
7	Dr. Hemraj Bairwa	Janmat Power National Research Journal	Study of patterns of urban sprawl and directional expansion		Peer Reviewed Multi Disciplinary International Journal	International	2023	2320-3714		Airo Journals
8	Dr. Madhurani chouhan	RAJNITIK CHINTAK (BHARTIYE EVM PASHCHATAY)	Arstoo Rajneeti vigyan ke janak				2023	978-93-92267-08-6		KAPTAN NETRAM SINGH CHARITABLE TRUST INTERNATIONAL UNIVERSITY BOOKS PUBLICATION HOUSE

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

9	MS. VIJAYLAXMI KUMAWAT	RAJNITIK CHINTAK (BHARTIYE EVM PASHCHATAY)	BAL GANGADHAR TILAK				2023	978-93-92267-08-6		KAPTAN NETRAM SINGH CHARITABLE TRUST INTERNATIONAL UNIVERSITY BOOKS PUBLICATION HOUSE
10	MS SUMAN KUMARI	RAJNITIK CHINTAK (BHARTIYE EVM PASHCHATAY)	VINOBA BHAVE: AHIMSA OR MANVADHIKAR KE BHARTIYE VAKEEL				2023	978-93-92267-08-6		KAPTAN NETRAM SINGH CHARITABLE TRUST INTERNATIONAL UNIVERSITY BOOKS PUBLICATION HOUSE
11	MR. SHAHIAD KHAN	VIDHYAVARTA	SALTANAT KALEEN BHARAT ME NAGRO KA JEEVAN ,UTTHAN EVM SANRACHNA	International Conference On Multidisciplinary research	International Conference On Multidisciplinary research	International	2022	2319-9318	AGRAWAL P.G. COLLEGE & INDIAN SOCIETY OF GANDHIAN STUDIES	HARSHVARDHAN PUBLICATION PVT. LTD.

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय रूपनगढ़ (अजमेर)

रजि. नं. [illegible] जयपुर 2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर–305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

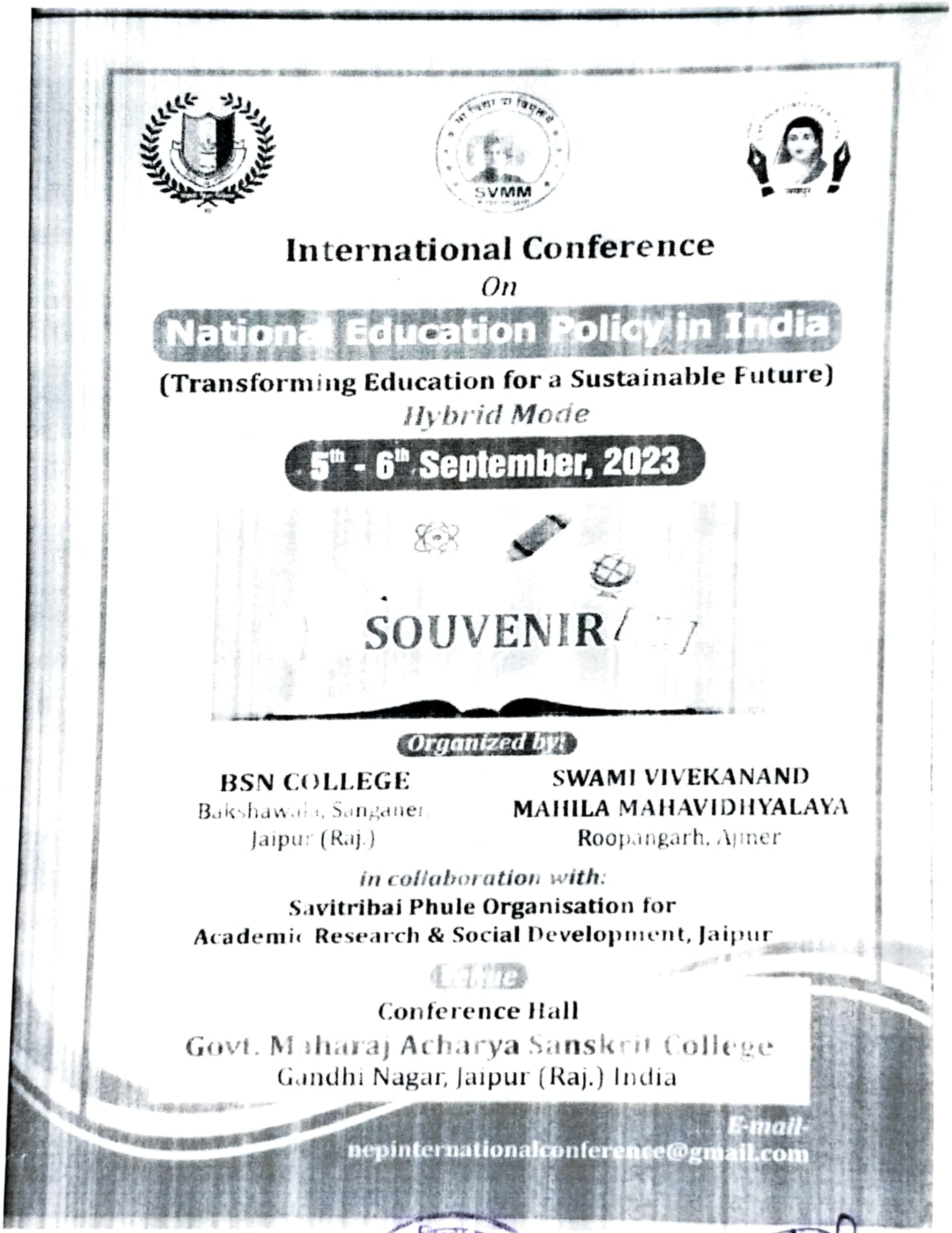

International Conference

On

National Education Policy in India

(Transforming Education for a Sustainable Future)

Hybrid Mode

5th - 6th September, 2023

SOUVENIR

Organized by:

BSN COLLEGE
Bakshawala, Sanganer
Jaipur (Raj.)

SWAMI VIVEKANAND MAHILA MAHAVIDHYALAYA
Roopangarh, Ajmer

in collaboration with:

Savitribai Phule Organisation for Academic Research & Social Development, Jaipur

Venue

Conference Hall
Govt. Maharaj Acharya Sanskrit College
Gandhi Nagar, Jaipur (Raj.) India

E-mail-
nepinternationalconference@gmail.com

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

अनुसंधान, योजना और प्रशासन में सुधार के मंच के रूप में काम करेगा। नीति में शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी के समुचित इस्तेमाल की बात कही गयी है जिससे शिक्षण, ज्ञानार्जन और मूल्यांकन की प्रक्रियाओं में सुधार होगा। यह बेहतर शिक्षकों को तैयार करने और उनके सतत पेशेवर विकास में मददगार होगा। प्रौद्योगिकी के समावेश से कमजोर समूहों तक शिक्षा की पहुंच बढ़ेगी तथा शैक्षिक योजना, प्रशासन और प्रबंधन को ज्यादा सुचारु बनाया जा सकेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 की दृष्टि अत्यंत व्यापक और दीर्घकालिक है। इस लक्ष्य और नीति के सिद्धांतों को ध्यान मे रखते हुए लक्ष्यों और प्रयोजनों को हासिल करने के लिये तौरतरीके निर्धारित किये गये हैं। शिक्षा के मौजूदा और इच्छित परिणामों के बीच अंतर को शुरुआती बाल्यावस्था से उच्चतर शिक्षण तक व्यवस्था में बड़े सुधारों तथा समुचित रणनीतियों और कार्यक्रमों के जरिये दूर किया जाना है। यह नीति अपने दृष्टिकोण और इरादे में वैश्विक के साथ ही स्थानीय भी है। यह कई मायनों में पिछली नीतियों से काफी आगे है। इसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को शैक्षिक सुधारों के एजेंडे में सबसे ऊपर रखा गया है। इसका लक्ष्य शिक्षा की बुनियाद को मजबूत बनाना, सबसे कमजोर समूहों की शैक्षिक जरूरतों को पूरा करना तथा भारत को शिक्षा के क्षेत्र में वैश्विक तौर पर अगली स्थान तक पहुंचाना है।

मुख्य शब्द – प्रौद्योगिकी, समावेश, शिक्षा, उच्च गुणवत्ता

Redefining Education Paradigm

'The Vision And Goals Of The National Education Policy 2020'

सुश्री विजयलक्ष्मी कुमावत

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश विकास के लिए अनिवार्य शिक्षा आवश्यकता को पूरा करने के लिए बनायी गयी है। नयी शिक्षा नीति भारत के सभी छात्रों को विश्वस्तरीय उच्चगुणवत्ता वाली शिक्षा देने के लक्ष्य से बनायी गयी है। इस नीति से छात्रों की सृजनात्मक क्षमताओं, समस्या समाधान दृष्टिकोण, को उजागर करने का प्रयास है। नयी शिक्षा नीति भारत के सभी युवाओं में सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमता को भी विकसित करने के उद्देश्य से भी तैयार की गयी है। यह शिक्षा नीति न केवल छात्रों के लिए है बल्कि पूरे Indian education system को उन्नत करने के लिए बनायी गयी है जिसमें छात्र, शिक्षक और पूरी शिक्षा प्रणाली शामिल है। नई शिक्षा नीति भारत के युवाओं को विश्वस्तरीय उच्चगुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने में मदद करेगी। इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षित जनता को शिक्षित करने तक सीमित नहीं है बल्कि युवाओं को एक जिम्मेदार इंसान बनाना भी है। नई शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य युवाओं के बीच अच्छे चरित्र का विकास करना है छात्रों को रचनात्मक सोचने के लिए प्रेरित किया जाएगा और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित किया जाएगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मानवीय नैतिकता और संवैधानिक मूल्यों जैसे सहानुभूति, जिम्मेदारी, स्वच्छता, दूसरों के लिए सम्मान, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक स्वभाव, समानता आदि सिखाएगी। नई शिक्षा नीति बहुभाषावाद, स्थानीय भारतीय भाषा और शिक्षण और सीखने में भाषा की शक्ति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के छात्रों को उच्चगुणवत्ता वाली सार्वभौमिक शिक्षा प्रदान करना है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में युवाओं से एक ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रदान करने की दृष्टि है जो भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने के उद्देश्य से सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके देश को एक जीवंत ज्ञान समाज में बदल सके। इस प्रकार नई शिक्षा नीति भारत के गौरव, महत्ता और इसकी समृद्ध, विविध, प्राचीन और आधुनिक संस्कृति, ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं के प्रति संवेदनशील है।

मुख्य बिंदु 1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य 2) छात्रों का विकास

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय रूपनगढ़ (अजमेर)

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर–305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

मूल्यांकन सुधार : योग योग्यता आधारित आकलन की ओर बढना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण एवं लक्ष्यों के सन्दर्भ में

सुश्री फराह

सहायक आचार्य, स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

किसी भी स्कूली व्यवस्था के सुचारू संचालन के लिए सबसे ज़रूरी है कि विद्यार्थियों की पढ़ाई के आकलन का स्तर उत्तम हो । एक ऐसी आकलन व्यवस्था हो जो मान्य, भरोसेमंद निष्पक्ष हो तथा जिसमें भिन्न–भिन्न क्षमता वाले बच्चों के लिए समानता का भाव हो । हालांकि वर्तमान में देश की अधिकांश स्कूली व्यवस्था मे आकलन के पैमाने परीक्षाएं या टेस्ट होते हैं जो सिर्फ विषयों पर उनकी पकड़ का आकलन कर पाते हैं जिससे विद्यार्थियों की संपूर्ण सामर्थ्य का पूरी तरह आकलन नहीं हो पाता। ऐसी व्यवस्था से विद्यार्थियों में अनावश्यक दबाव, तनाव तथा बेचैनी बढ़ती है तथा शिक्षा का लक्ष्य सिर्फ मुख्य परीक्षाओं में उच्च अंक हासिल करने तक सिमट जाता है। सीखने का सामर्थ्य देने में आकलन की भूमिका को प्रधानता मिलनी चाहिए । इसके लिए इसमें शामिल सभी हितधारकों : शिक्षकों, स्कूलों, अभिभावकों और तंत्र को यह समझाना होगा कि आकलन का उद्देश्य विद्यार्थियों को सीखने में समर्थ बनाना और शिक्षा के लक्ष्यों को साकार करने में मदद देना है। एनईपी 2020 बोर्ड परीक्षाओं को पुनः संरचित (डिजाइन) करने का सुझाव देती है जो उन्हें और अधिक प्रामाणिक बनाए, शैक्षिक तनाव एवं दबाव कम करे और कोचिंग संस्कृति को हतोत्साहित करे। बोर्ड परीक्षाओं में मुख्य तौर पर रटन्त क्षमता से ज्यादा मूलभूत सामर्थ्य का आकलन होना चाहिए। प्रामाणिक एवं विश्वसनीय आकलन प्रक्रिया के निर्धारण क्रियान्वयन एवं उपयोग की शिक्षकों की क्षमता का नियमित प्रशिक्षण के जरिए बढ़ाया जाना चाहिए। आकलन के परिणामों के विश्लेषण करने, रिपोर्ट देने तथा उनका उपयोग करने के लिए शिक्षकों की क्षमता विकसित करना भी आवश्यक है। आकलन प्रक्रिया सुधारों पर अब कई दशकों से चर्चा चल रही है। पहले की रिपोर्टों एवं नीतियों में सुधार के जिन प्रमुख क्षेत्रों की ओर इशारा किया गया है एनईपी 2020 में उन्हें दोहराया गया है। अतः हमें मौजूदा आधार पर आगे निर्माण करना होगा। पहले की सफल विधियों से सीखना होगा, अब तक जो सबक मिले हैं वे महत्वपूर्ण हैं। देशभर में आकलन व्यवस्था को समझने और उपयोग करने के मौजूदा तरीकों को बदलने के लिए हमारे प्रयासों तथा समाधानों में रचनात्मकता एवं नई सोच होनी चाहिए। परिकल्पित प्रक्रियाओं एवं व्यवस्थाओं की दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील रहना सभी कार्यों का आधार होना चाहिए। श्रेष्ठ पद्धतियों का भंडार बनाने के साथ–साथ संस्थाओं के बीच साझा एवं सामूहिक कार्रवाई से प्रयासों को एकजुट किया जा सकेगा।

मुख्य **शब्दः**– आकलन, क्षमता,सुधार, बोर्ड परीक्षा, सामर्थ्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षक सशक्तिकरण : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा वितरण को बढ़ाना

श्रीमती राधेरानी तिवारी

सहायक आचार्य, स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक उच्च मानकों के शिक्षित और कुशल व्यक्तियों के साथ एक ज्ञानवान समाज बनने की भारत की आकांक्षा के लिए हमें अपनी स्कूली शिक्षा प्रणाली की मजबूत नींव सुनिश्चित करने की आवश्यकता होगी। समानता गुणवत्ता सुलभता और सामर्थ्य के सिद्धांतों के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चों के साथ–साथ शिक्षकों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 के बाद, शिक्षक शिक्षा कार्यनीति का उद्देश्य शिक्षकों को जानकारी के हस्तांतरण के बजाय ज्ञान के सूत्रधार बनने के साथ–साथ शिक्षण का [illegible] पुरस्

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय (अजमेर)

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ (अजमेर) राज.

रजि. नं. [illegible] जयपुर 2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर–305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

[illegible] बनाने और ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना है। जैसे मिश्रित तकनीक शिक्षा हमारे दैनिक जीवन [illegible] हिस्सा बनती है और दुनिया में पेशेवरों और व्यक्तियों के रूप में सफल होने के लिए जीवन कौशल जैसे [illegible]नात्मकता रचनात्मकता तथा जिज्ञासा और अधिक आवश्यक हो जाती है शिक्षकों को भी विद्यार्थियों को सलाह [illegible] का पाठ्यक्रम पढ़ाते हैं उसके साथ वास्तविक जीवन के अनुभवों और कौशल को जोड़ने की आवश्यकता [illegible]ती है। स्कूल शिक्षा विभाग राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद–एनसीईआरटी राज्य सरकारों और राज्य [illegible]शिक्षा एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद – एससीईआरटी के साथ मिलकर काम कर रहा है ताकि शिक्षकों को निरंतर [illegible]व्यावसायिक विकास में सहायता के लिए अल्पकालिक मॉड्यूल तैयार किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 [illegible]प्रत्येक शिक्षक के प्रति वर्ष कम से कम 50 घंटे व्यावसायिक विकास जारी रखने की परिकल्पना करता है। राष्ट्रीय [illegible]शिक्षा नीति – 2020 के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए हाल में एनसीईआरटी ने शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में [illegible]राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों और स्वायत्त निकायों के सहयोग से स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों– शिक्षकों प्रधान [illegible]शिक्षकों / प्रधानाचार्य और शैक्षिक प्रबंधन तथा प्रशासन में अन्य हितधारकों के लिए निष्ठा (स्कूल प्रमुखों और [illegible]शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) अतीत में यह स्पष्ट रूप से स्थापित हो चुका है कि पूर्व सेवा और [illegible]सेवाकालीन शिक्षक पर ध्यान केंद्रित करने से विद्यार्थियों के सीखने के परिणाम पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा अपनाए गए बहुआयामी दृष्टिकोण से शिक्षक शिक्षा को पुनर्जीवित करने की संभावना है। प्रतिभावान विद्यार्थी अपनी पसंद के तौर पर आईटीईपी को चुन सकते हैं और एनपीएसटी, एनएनएम, सीपीडी आदि जैसे कार्यक्रम शिक्षकों की शैक्षणिक गुणवत्ता के सुधार में योगदान कर सकते हैं। साथ ही उप–समान शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों और डी.एल.एड पाठ्यक्रमों को भी चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के प्रयास करने होंगे। डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम ने कहा था प्रबुद्ध नागरिकता के तीन घटक होते हैंरू मूल्य प्रणाली के साथ शिक्षा, धर्म को आध्यात्मिक शक्ति [illegible] बदलना और विकास के माध्यम से आर्थिक समृद्धि लाना। हम अपने शिक्षकों में युवा पीढ़ी के लिए मशाल वाहक [illegible]बनने और भारत के विकास तथा निरंतर प्रगति को सही दिशा में आकार देने के लिए [illegible] करते हैं।

मुख्य शब्द : सहयोग [illegible], रचनात्मकता, कौशल

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय रूपनगढ़ (अजमेर)

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु मोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

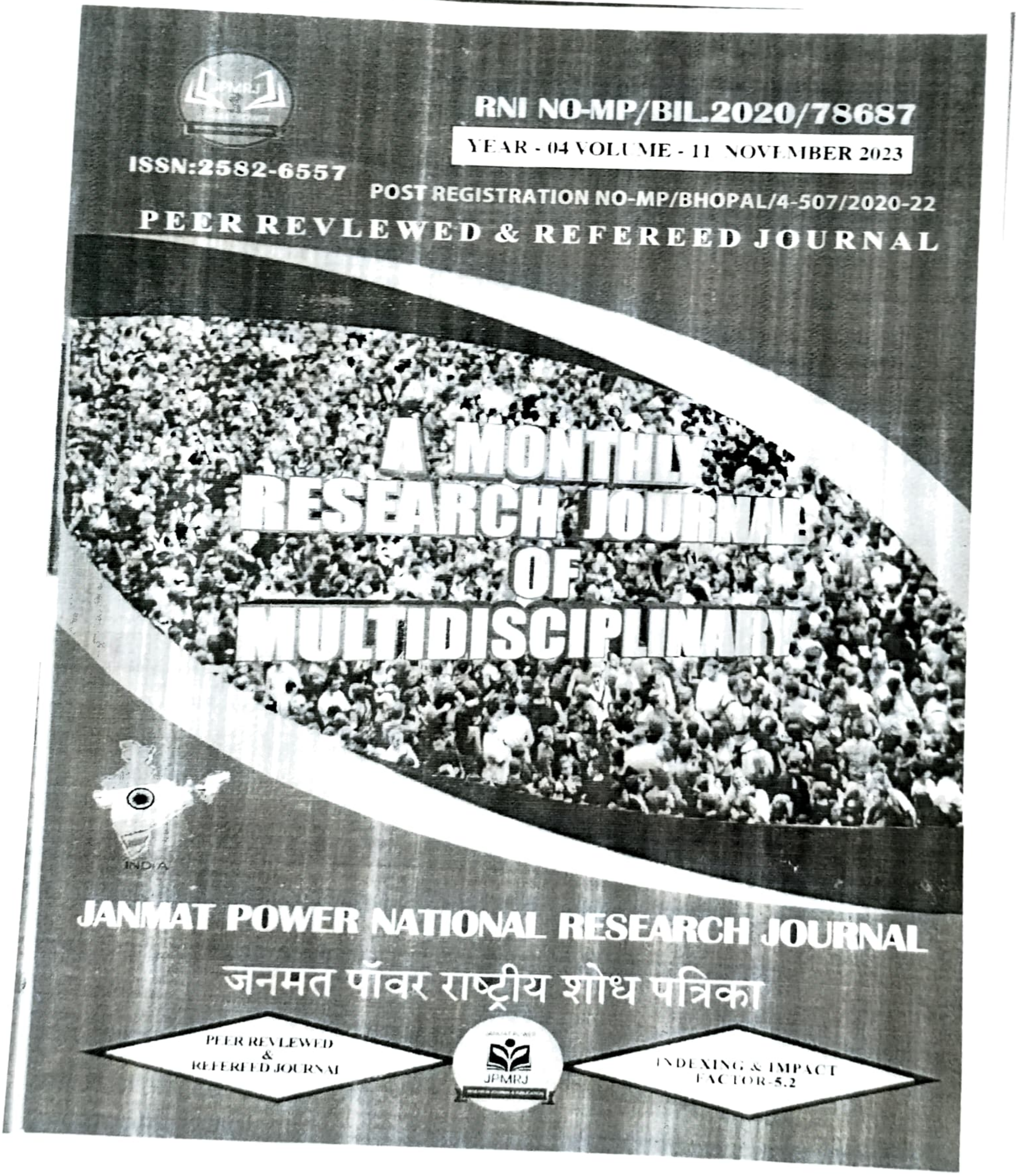

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ (अजमेर) राज.

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

मोबाइल : 9314618091

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

ISSN: 2582-6557

RNI -MP/BIL/2020/78687

JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY
NATIONAL PEER-REFERRED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

07	महावीर स्वांत्ता के नाटक 'सफेद घोड़े का सवार' का समीक्षात्मक अध्ययन	अंजली डॉ चचन लाल	63-72
09	कोविड-19 और घरेलू हिंसा: एक मनोसामाजिक अध्ययन (जनपद देहरादून, के सेवलाकला क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ .अनुराधा वर्मा	73-91
10	शिक्षा में मीडिया की चुनौतियों और प्रभावों का विश्लेषात्मक अध्ययन	डॉ रजनीश झा	92-96
11	शिक्षा प्रतिमानों को पुनर्परिभाषित करना: एनईपी 2020 के दृष्टिकोण और लक्ष्य के सन्दर्भ में	अनिता धाकड़	97-107
12	सांस्कृतिक नायक : राम और हिंदी कविता	विजयलक्ष्मी कुमावत राधे रानी तिवारी	108-112

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय (अजमेर) रूपनगढ

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर–305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

ISSN-2582-6557 RNI-MP/BIL/2020/78687
JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY November-2023
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

सांस्कृतिक नायक : राम और हिंदी कविता

विजयलक्ष्मी कुमावत
सहायक आचार्य (हिंदी), स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
राधे रानी तिवारी, रिसर्च स्कॉलर

प्रस्तावना

सस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है। जो उस समाज के सोचने विचारने कार्य करने के स्वरूप में अंतर्निहित होता है ।

सस्कृति शब्द 'कृ' धातु से बना है इसका अर्थ है 'करना'। संस्कृति का अर्थ किसी विशेष समाज और उसके विचारों रीति-रिवाजो और कला से सबधित है। संस्कृति एक जीवंत समाज की जीवन धारा है जिसे हम अपनी कहानियां सुनाने, जश्न मनाने, अतीत को याद करने, अपना मनोरंजन करने और भविष्य की कल्पना करने के कई तरीकों से व्यक्त करते हैं।

नायक

आधुनिक सस्कृति में एक नायक को अक्सर ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। जिसकी साहस, निरवार्थता और महान गुणो के लिए प्रशसा की जाती है, और जो दूसरों की मदद करने या एक महान लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बलिदान करने को तैयार रहता है।

सांस्कृतिक नायक राम

राम नायक इसलिए नहीं है कि वह उत्तम जीवन जीते हैं, बल्कि इसलिए है, कि वह अद्भुत जीवन जीते है। कई हजार साल पहले जब दुनिया के अधिकांश हिस्सों में शासक केवल बर्बर और विजेता थे। वही राम ने मानवता, बलिदान और न्याय की एक अनुकरणीय भावना दिखाई थी।

राम की पूजा केवल इसलिए नहीं की जाती कि वह बाहरी दुनिया के विजेता है, वरन वह आंतरिक जीवन के भी विजेता है क्योंकि वह प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी विचलित नही होता है। अपने जीवन की सभी चुनौतियों के बावजूद व कभी अपना संतुलन नहीं खोते, कभी कडवा या प्रतिशोधी नहीं बनते, वह छल एवम राजनीति से काफी हद तक दूर रहते हैं और अपनी शक्ति का दुरुपयोग न करने को लेकर सतर्क रहते है। समभाव की भावना रखने वाले व्यक्ति अपने जीवन पथ पर आगे बढता है। ईमानदारी और आत्म बलिदान का जीवन जीता है, अपनी प्रजा के लिए अपनी खुशी का त्याग करने को तैयार रहता है, और सबसे महत्वपूर्ण एक ऐसी सस्कृति को महत्व देता है। वह

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय रूपनगढ (अजमेर)
प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ (अजमेर) राज.

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर–305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

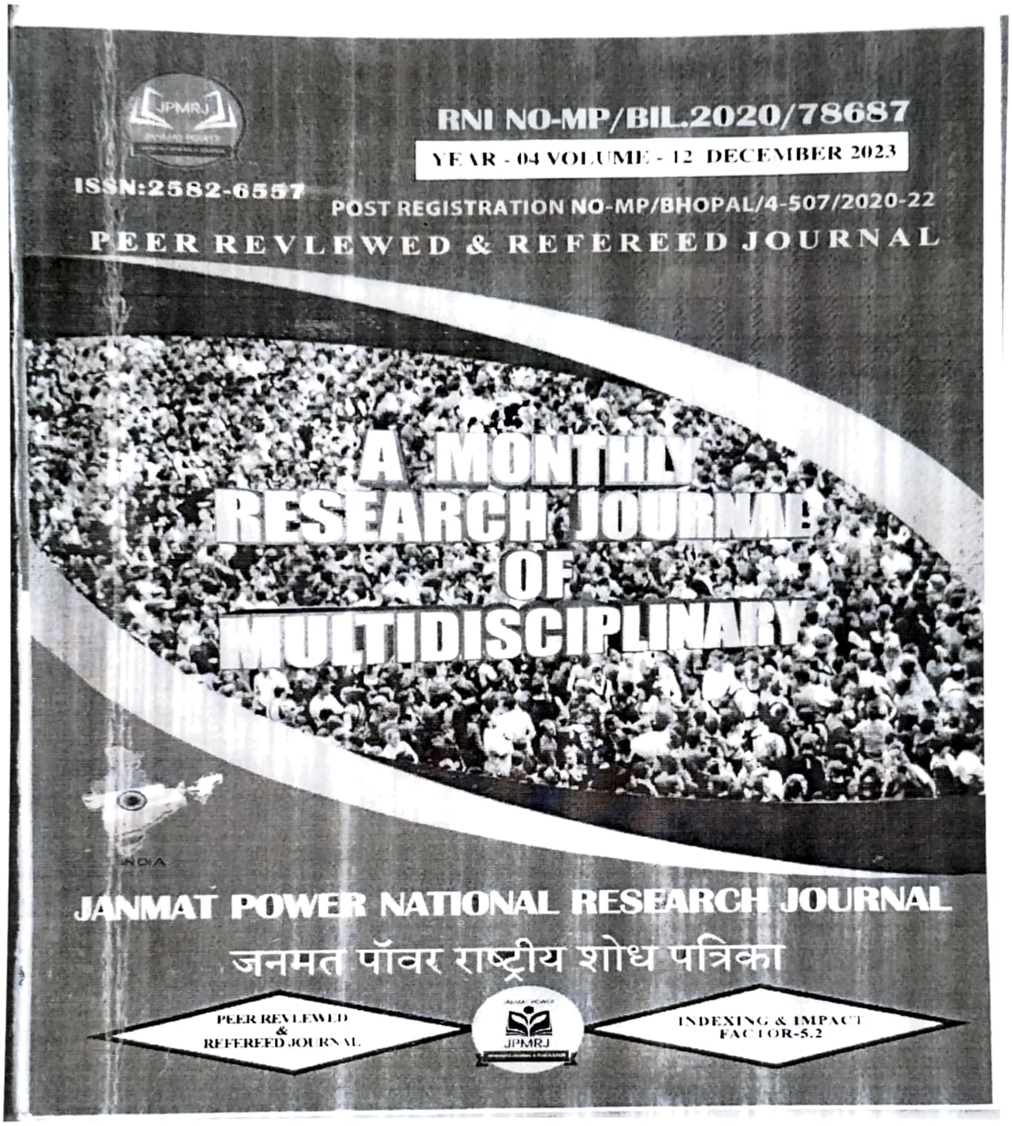

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर–305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

ISSN: 2582-6557

RNI-MP/BIL/2020/78687

JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY
NATIONAL PEER-REFERRED,REVIEW JOURNAL, INDEXING & IMPACT FACTOR-5.2

08	हिंदी धारावाहिक में भारतीय वीरों की शौर्य गाथाएं' धारावाहिक रानी लक्ष्मीबाई के। (सन्दर्भ में	डॉ राम बाबू रघुवंशी	44-48
09	ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सलाम' के पात्रों द्वारा आतिथ्य प्रथा के अंत के लिये किया गया संघर्ष	सीताराम सिसोलिया डॉ. कमलेश सिंह नेगी	49-55
10	अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों की शिक्षा हेतु किये गये प्रयास	डॉ यशवंत सिंह पटेल	56-63
11	A Comparative Study Of Patients Satisfaction In Government And Private Hospitals Of Jabalpur District	Dr. Bhavna Likhitkar	64-76
12	Development of improved mass-multiplication technique for wax moth, Galleria mellonella, (Lepidoptera, Pyralidae) larvae in the laboratory	Dinesh Kumar Kushwaha Deepak Kumar Mittal	77-87
13	यौगिक मंत्र साधना की वैज्ञानिकता	डॉ नीना	88-94
14	मुंशी प्रेमचंद: कथा साहित्य में व्यंग्य	विजयलक्ष्मी कुमावत राधे रानी तिवारी	95-101

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

रजि. नं. 114 जयपुर 2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

ISSN-2582-6557

JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RNI MP/BIL/2020/78687
NATIONAL PEER REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING & IMPACT FACTOR-5.2 December-2023

"मुंशी प्रेमचंद: कथा साहित्य में व्यंग्य"

विजयलक्ष्मी कुमावत (सहायक आचार्य, हिंदी)
स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़।
राधे रानी तिवारी (रिसर्च स्कॉलर)

मुंशी प्रेमचंद साहित्यिक जगत में सबसे अधिक प्रसिदध कथाकार रहे हैं। जीवन की अयावहता और क्रूर विद्रूपता को जिस आक्रोश, प्रखरता, शालीनता और जिंदादिली के साथ उन्होने अपने गदय साहित्य में शब्दबदध किया है, उससे हिंदी गदय में शिल्प और संवेदना दोनों ही धरातल पर व्यापक बदलाव आया है। निस्संदेह प्रेमचंद कलम के सिपाही थे। सर्वाधिक प्रासंगिक होने के कारण उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक हैं। मुंशी प्रेमचंद के सभी साहित्यिक रूपों मे उनका कथाकार रूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उनकी साहित्यिक प्रतिभा का चरम निदर्शन इसी रूप में हुआ है।

मुंशी प्रेमचंद ही ऐसे रचनाकार थे जो पूरी ईमानदारी और गंभीरता के साथ अपने समय के व्यापक यथार्थ को अभिव्यक्त कर रहे थे। उनकी रचनाओं के पात्र व्यंग्य के माध्यम से कुठाराघात करते दिखते हैं

प्रेमचंद के कथा साहित्य में सामाजिक स्थिति पर व्यंग्य:

प्रेमचंद अत्यंत प्रखर सामाजिक चेतना से संपन्न लेखक थे। उनका लक्ष्य सामाजिक सुधार था। इस उद्देश्य से प्रेरित होकर वे सड़ी-गली व्यवस्था, अंधविश्वास, रूढी, सामाजिक अत्याचार आदि की तीक्ष्ण आलोचना करते थे। प्रेमचंद के कथा साहित्य में समाज व्यवस्था पर व्यंग्य हैं, जिसके अंतर्गत मजदूर किसानों तथा दलितों की यथार्थपरक सामाजिक स्थिति का वास्तविक अंकन किया गया है। 'सेवा सदन' के अंतर्गत प्रेमचंद ने पाखंडी समाज के प्रच्छन्न वेश्या प्रेम पर तीखा व्यंग्य किया है--

"प्राचीन ऋषियों ने इंद्रियों को दमन करने के दो साधन बताएं हैं, एक राग, दूसरा बैराग्य।" हमारी नागरिक समझ ने मुख्य स्थान पर मीना बाजार सजाकर राग मार्ग को ग्रहण किया। मिथ्या धार्मिक आडंबरों पर प्रेमचंद ने बड़ा ही तीखा व्यंग्य किया है। गोदान मे जातिभ्रष्ट ब्राहमण के शुद्धिकरण का यह तरीका दृष्टव्य है मातादीन को कई रुपए खर्च करने के बाद अंत में काशी के पंडितो ने फिर से ब्राहमण बना दिया । मातादीन को शुद्ध

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

AGRAWAL P.G. COLLEGE

Affiliated to University of Rajasthan | Managed by Shri Agrawal Shikshan Samiti
(A Co-Educational Collage)

EST. 1957

International Conference on
Multi-Disciplinary Research

VIMARSH - 2022

"Innovation & New Challenges in the Present Scenario"

22nd - 23rd April 2022

In Collaboration with
" Indian Society of Gandhian Studies"

29) महिला सशक्तिकरण : आयाम और अधिकार
अशोक कुमार, अलवर ||156

30) वैश्वीकरण और भारतीय समाज
मनीषा पाहुजा, अलवर ||161

31) माध्यमिक स्तर की छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन
डॉ. पिंकी राजपूत, जयपुर ||166

32) उभरते भारत में वेब मीडिया और पत्रकारिता का नया दौर
डॉ. स्वाति शर्मा, जयपुर ||170

33) दलित चेतना एवं सामाजिक सरोकार
डॉ. बंशीलाल, जालोर ||173

34) किशोर विधार्थियो मे शैक्षिक तनाव एवं समायोजन क्षमता
देवेन्द्र सिंह, डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, Alwar (Raj.) ||177

35) औषधीय पौधे एवं उनकी उपयोगिता: एक अवलोकन
मानवी आहूजा, डॉ. निष्ठा, मोहाली ||180

36) सल्तनतकालीन भारत में नगरों का जीवन, उत्थान एवं संरचना
शाहिद खान, डॉ. दिनेश माडोत, अजमेर (राज.) ||184

37) विषय चयन में परामर्श की आवश्यकता
दीप कंवर, जयपुर, राजस्थान ||189

38) गांधी की विरासत
डॉ. ममता चतुर्वेदी, लोहागल, अजमेर ||194

39) अजमेर लोकसभा संसदीय क्षेत्र आम चुनाव २०१९ – निष्कर्ष
चन्द्रप्रकाश माली, डॉ. विष्णु कुमार, अजमेर (राजस्थान) ||199

40) निवेश: आज की महति आवश्यकता
AMAN AHUJA, , PROF. BB TIWARI, GURUGRAM ||204

41) Impact of merger & acquisition on financial performance of ....
Ms. Manisha Naruka ||208

www.vidyawarta.com/03 || http://www.printingarea.blogspot.com

का जिक्र कई श्लोकों में है। एक ऋग्वेदिक श्लोक कहता है। 'खेती पर सिद्धि हासिल करके हम फल—फूल सकते है, ईश्वर हमें जड़ी—बूटियों के जरिए पोषण प्रदान करे, ईश्वर करे कि हम भूमि पर हल जो सकें, खुषियों की बौछारों से भूमि पारजन्य (सिंचित) हो। वैदिक किसान मृदा उर्वरता बढ़ाने की तकनीक, तैत्तिरीय संहिता जानते थे, जिसे हम फसल चक्रीकरण कहते हैं। भारतीय बांटनी के जनक रॉक्सबर्ग ने कहा था 'बुआई के तरीकों के लिए पश्चिम भारत का ऋणी है। न्यूयार्क में कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. ड्यू रैमसे तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नायडू ने कई तरह के पौधों एवं सब्जियों वाले, फलों वालों पेड़ों में पाया कि इनका एक कम्बीनेशन डिप्रेशन, एंग्जायटी को दूर करते हैं। हरी पत्तेदार सब्जियाँ पालक में पोषक तत्वा की बहुतायत होती है। बीन्स औरनट्स, हल्दी और काली मिर्च, दालचीनी, केसर में जबरदस्त रोग प्रतिरोधक तत्व मौजूद रहते है। साबूदाना कार्बोहाईड्रेट का मुख्य स्त्रोत है। यह एनर्जी से लबालब रहता है। पचने में भी आसान होता है। यह इस्टेंट एनर्जी प्रदान करता है। प्रोटीन भी मिलता है। पबमेड सैंट्रल में प्रकाषित विभिन्न षोधों के अनुसार प्राटिन न केवल आपके मेटाबोलिक रेट को बढ़ाता है। बल्कि भूख को भी कम करता है। डेविस यूनिवर्सिटी के चांसलर गैरी के अनुसार यूनिवर्सिटी के प्लांट जेनेटिस्ट रिचर्ड मिशेलमोर ने यूनिवर्सिटी से कहा है कि पौधों के डीएनए पहचाने वाली मशीन को कोरोना वायरस टैस्टिंग मशीन में बदलकर कोरोना वायरस की रोकथाम में मदद कर सकते है।

REFERENCES:

१. कोहली दीपक, सक्सेस मिरर, आगरा, फरवरी २०१७, पेज ३५
२. द्विवेदी बालेन्दुशेखर, महा मीडिया, भोपाल, मार्च २०१७, पेज ४८
३. शर्मा के जी, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १० जनवरी २०२२
४. भास्कर न्यूज, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १२ जनवरी २०२२
५. भास्कर न्यूज, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १४ फरवरी २०२२
६. रघुरामन, एन. दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १ फरवरी २०२२

36

सल्तनतकालीन भारत में नगरों का जीवन, उत्थान एवं संरचना

शाहिद खान
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)

डॉ. दिनेश माडोत
शोध निदेशक, इतिहास विभाग,
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)

****

(ABSTRACT) सार :

प्राचीन काल में भी नगर व्यवस्था थी। व्यास ने महाभारत में लिखा है कि राजधानी को सुरक्षित रखने के लिये उसका एक दीवार या पहाड़ी से घिरा रहना आवश्यक है। कौटिल्य ने भी अर्थशास्त्र में शहर की परिधि आयताकार होना बताई ताकि सम्पूर्ण शहर सड़कों द्वारा मोहल्लों में विभाजित किया जा सके। उत्तरी भारत में दिल्ली सल्तनत की १३वीं शताब्दी के प्रारम्भ में स्थापना हुई उस समय तीर्थ स्थानों वाले प्राचीन नगर राजधानियों तथा अनेक ऐसे नगर थे जो कि प्रशासनिक व व्यापारिक केन्द्र थे। शहरीकरण सल्तनतकाल की एक प्रमुख विशेषता थी। दिल्ली सल्तनत की स्थापना भारतवर्ष के राजनीतिक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। क्योंकि शहरों का उद्भव आर्थिक, धार्मिक एवं प्रशासनिक कारणों से हुआ, इसलिए तुर्क आक्रमणकारियों के भारत आगमन से अनेक परिवर्तन हुए। फलस्वरूप नई—नई विचारधाराएँ आई और प्रशासनिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में भी बदलाव शुरू हुए। मुहम्मद हबीब के मतानुसार ''तुर्कों ने पहले से चले आ रहे आर्थिक संगठन से कहीं अधिक श्रेष्ठ आर्थिक संगठन का निर्माण किया और इसके कारण नगरों अथवा शहरी केन्द्रों का विस्तार हुआ। इस काल में शहरों की संख्या में वृद्धि

हुई उनका विस्तार हुआ ग्रामीण सम्बन्धों में परिवर्तन हुए और इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप नये शासक वर्गों का प्रादुर्भाव हुआ नगरीकरण की प्रक्रिया में राजनैतिक, आर्थिक और प्रशासनिक कारणों से और अधिक तीव्रता आई। इस काल के दौरान कुछ शहरी केन्द्र पुनः विकसित हुए और कुछ नए शहर भी बसे। यह प्रक्रिया निरन्तर आगे भी चलती रही।

मुख्य शब्द : तुर्क, नगर सेठ, नगर अध्यक्ष अभिजात वर्ग, व्यवसायिक संघ, शहरी क्रांति

भूमिका:

सल्तनतकाल में नगरीकरण की प्रक्रिया विषय पर चर्चा करने से पहले यह जानना जरूरी होगा कि नगरीकरण का अर्थ होता है विकास का वह स्तर जहाँ दूसरी चीजों के अलावा लोग एक क्षेत्र में मिलकर रह सके एक केन्द्रीय शासन व्यवस्था हो और वस्तुओं के उत्पादन के लिए उद्योग का अस्तित्व हो। १३वीं शताब्दी के उत्तरी भारत में नगरीय क्रांति की प्रमुख विशेषता को समझना एक दिलचस्प और सामाजिक आर्थिक भी आवश्यक और प्रासंगिक है। सल्तनकाल में मुस्लिम शासन की स्थापना से भारत वर्ष में नगरों का तेजी से विकास होने लगा।[१] नगरों में मुस्लिम जनसंख्या बढ़ने लगी। नये—नये मुहल्ले स्थापित होने लगे, नगर विन्यास बदलने लगा और उन पर उस मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव पड़ने लगा। नगरों का प्राचीन स्वरूप बदलने लगा। मस्जिदें, मीनारें, मदरसे, मकबरे आदि बनने लगे, ज्यों—ज्यों मुस्लिम शासन का विस्तार देश के भागों में होता गया इससे नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र होती गयी। सल्तनतकाल में इतने शहरी केन्द्रों का विकास हुआ कि उनकी संख्या को देखकर आश्चर्य होता है।[२] अबुल फजल ने ३२०० कस्बों की संख्या बताई है। सल्तनकाल में भी उनकी संख्या इतनी ही रही होगी क्योंकि मुगल शासन के स्थापित होने के तुरन्त बाद बसे नगरों की संख्या अधिक नहीं थी। नगरीकरण ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जनपद का ग्रामीण स्वरूप क्रमशः लुप्त हो गया और उसमें बसने वाले अधिकांश लोग गैर कृषक हो गये और लगभग नियमित रूप से अपने खाने का सामान खरीदने लगे। ऐसी स्थिति में मुद्रा की अर्थव्यवस्था का वर्चस्व होना था। उपभोग की वस्तुओं के उत्पादन और उद्योग का विस्तार होना अवश्यम्भावी था जिसके परिणामस्वरूप अन्दरूनी और बाहरी व्यापार होने लगा। नगरीकरण दिल्ली सल्तनतकाल में दिखायी पड़ता है। कुछ नगरों का विकास राजधानी, कुछ का विकास तीर्थस्थलों के रूप में कुछ नगरों की आवश्यकतानुसार हुआ। नगरों के विकास के साथ यातायात मार्गों का निर्माण हुआ। आर्थिक नगरों के प्रसार के साथ दस्तकारान उत्पादन में जो बढ़ोत्तरी हुई और अनेक तकनीकी परिवर्तनों और सुधारों से बल मिला।[३]

नगरों का जीवन:

समकालीन ऐतिहासिक स्त्रोतों व विदेशी पर्यटकों के द्वारा दिये गये विवरणों में शहरी जीवन की झलक यथेष्ट रोचक एवं रंगीन थी। नगरों में सुल्तान व उसके परिवार के सदस्यों अमीरो, अधिकारियों, राज्यों के कर्मचारियों एवं सैनिकों के रहने के कारण चहल—पहल बनी रहती थी।[४] और बड़े—बड़े नगरों में जन—जीवन की व्यस्तता एवं गतिशीलता थी क्योंकि शहरों में विभिन्न देशों, प्रदेशों, जातियों, उपजातियों, समुदायों, व्यवसायों के तथा वर्गों के लोग निवास करते थे, किन्तु अन्य शहरों की तुलना में राजधानी में रहते थे किन्तु अन्य नगरों की तुलना में राजधानी के निवासियों का जीवन अनूठा था। सुल्तान के सिंहासनारोहण एवं राजपूतों के आगमन जैसे विशेष अवसरों पर कई दिनों तक समारोह मनाये जाते थे। सुल्तान रुकुन्नदीन फिरोज गायकों, विदषकों, नपुंसकों को इनाम व खिलअतें बांटा करता था। वह हाथी पर बैठकर नगर के बाजार में सोना लुटाया करता था।

कभी—कभी विजयी सुल्तान अभियान से वापस लौटता तो नगर की जनता उसका हर्षोल्लास से स्वागत करती थी। जब सुल्तान कैकुबाद गद्दी पर बैठा तो नगर का वातावरण बदल गया और सुल्तान की भोग—विलास प्रवृत्ति का असर नगर जनता पर पड़ा। किन्तु बलबन के ३० वर्ष के शासनकाल में दिल्ली की जनता भयभीत रही और उन्होंने संयम से जीवन व्यतीत किया।[५]

सामान्य जीवन पर धर्म का अत्यधिक प्रभाव होने के कारण हिन्दु—मुसलमान दोनों ही अपना कुछ

राजनीतिक चिंतक

(भारतीय एवं पाश्चात्य)

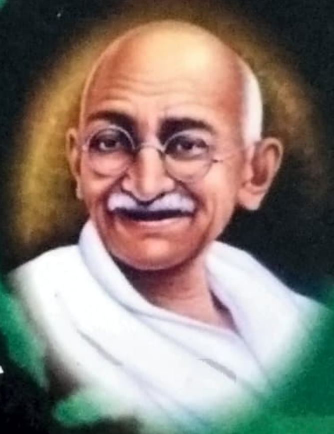

डॉ. बी.एल. देवन्दा

INDEX

1. Keratin Waste: Biodegradable Polymers — 5-21
   Niharika Singh

2. Swami Vivekananda — 22-27
   Dr. Sangeeta Mathur

3. Mahatma Gandhi — 28-36
   Dr. Ashish Jorasia

4. Analytical Study of Political Ideas of Harold J Laski — 37-43
   Dr. Sapna Gehlot

5. Nehru's Concept of Democracy — 44-51
   Dr. Khem Chand

6. The majestic Librarian from India : P N Kaula — 52-53
   Rahul Luthra

7. Leadership Qualities of Mahatma Gandhi — 54-57
   Mrs. Radhika Sharma

8. Gandhi and Religion — 58-64
   Ranjeet Kaur

9. लोकत्रांतिक विकेंद्रीकरण का गांधीवादी दृष्टिकोण — 65-69
   डॉ. बाबू लाल देवन्दा

10. अम्बेडकर के राजनीतिक विचार — 70-73
    डॉ. श्रवण कुमार

11. भारतीय संस्कृति की जीवन्त गतिशीलता : एकात्म मानववाद (प. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के संदर्भ में) — 74-78
    डॉ. अशोक कुमार गुप्ता

12. अरस्तु राजनीति विज्ञान के जनक — 79-80
    डॉ. मधु रानी चौहान

13. राजा राम मोहन राय :– भारतीय समाज के दिशा– प्रवर्तक
नरेश कुमार 81-86

14. दादा भाई नौरोजी – एक सामाजिक–आर्थिक विचारक
डॉ. राजेश मौर्य 87-93

15. रवींद्रनाथ टागोर यांचे शैक्षणिक विचार
डॉ. प्रतिभा दीपक सूर्यवंशी 94-100

16. बाल गंगाधर तिलक
विजयलक्ष्मी कुमावत एवं राधे रानी तिवारी 101-103

17. प्लेटो
डॉ संजीत कुमार सिंह 104-108

18. समाजवाद और गांधीवादी समाजवाद : तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. विद्या चौधरी 109-113

19. विनोबा भावे : अहिंसा और मानवाधिकार के भारतीय वकील
सुमन कुमारी एवं सविता शर्मा 114-117

20. डॉ एनी बेसेंट– : जो हृदय से भारत की बेटी थी
डॉ. रानू वार्ष्णेय 118-120

21. डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचार और नीतियां
डॉ. गायत्री सोलंकी 121-126

22. स्वामी दयानंद सरस्वती का राष्ट्र के उत्थान में योगदान
डॉ वंदना तिवारी 127-131

23. जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल की पुस्तकालय वर्गीकरण में भूमिका
सुशील कुमार गुजराती 132-133

24. बा और बापू। बा का बापू के समग्र जीवन में योगदान
भावना गौतम 134-138

25. जयप्रकाश नारायण और समग्र क्रांति की अवधारणा
श्रीमती अल्पना शर्मा 139-141

अरस्तु राजनीति विज्ञान के जनक

12

डॉ. मधु रानी चौहान
Asst. Professor, Swami Vivekanand Mahila Maha Vidhyalaya,Roopangarh

अरस्तु का जन्म 384 ईसवी पूर्व स्टेगीरस की ग्रीक कॉलोनी में हुआ था उनके पिता मकदुनिया के राजा के दरबार में शाही वैद्य थे 17 वर्ष की आयु में उन्हें शिक्षा पूरी करने के लिए बौद्धिक शिक्षा केंद्र एथेंस भेजा गया 20 वर्षों तक अरस्तु ने वहां शिक्षा ग्रहण की और पढ़ाई के अंतिम वर्षों में वह स्वयं अकादमी में पढ़ाने लगे अरस्तु यूनानी दार्शनिक थे अरस्तु ने अनेक रचनाएं लिखी उनकी 200 रचनाओं में से केवल 30 रचनाएं शेष रह गई अरस्तु ने विभिन्न विषयों में भौतिक, नाटक, संगीत, तर्कशास्त्र, राजनीति शास्त्र, जीव विज्ञान में रचना लिखी इससे पता चलता है कि अरस्तु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे 322 ईसवी पूर्व उनकी मृत्यु हुई अरस्तु की महानतम कृति पॉलिटिक्स को राजनीति विज्ञान की अनुपम निधि माना जाता है पश्चिमी जगत में राजनीति विज्ञान अरस्तु से ही प्रारंभ हुआ था **मैक्सी** ने अरस्तु को प्रथम राजनीतिक वैज्ञानिक की संज्ञा दी है प्लेटो के शिष्य अरस्तु को को ही राजनीति विज्ञान का जनक होने का गौरव प्राप्त है अरस्तु से पहले राजनीतिक चिंतन तो था लेकिन राजनीति विज्ञान नहीं था राज्य विषय चिंतन तथा राजनीति विज्ञान को स्वतंत्र विज्ञान का पद प्रदान करने का श्रेय अरस्तु को ही जाता है।

1.**आगमनात्मक विधि का अनुसरण**

आगमनात्मक विधि की विशेषता यह है कि इसमें विचारक को जो कुछ देखता है जिन ऐतिहासिक तथ्यों की खोज करता है उनका निष्पक्ष रुप से बिना अपनी किसी पूर्व धारणा से अध्ययन करता है और इस प्रकार के अध्ययन से जो निष्कर्ष निकलता है उसमें वैज्ञानिकता का पुट होता है अरस्तु को राजनीति शास्त्र के क्षेत्र में आगमनात्मक विधि के प्रणेता के रूप में स्वीकार किया है

2.यथार्थवादी विचारक : केटलिन के शब्दों में कन्फ्यूशियस के बाद अरस्तु सामान्य ज्ञान और मध्यम भाग का सबसे बड़ा प्रतिपादक है व्यवहारिक विचारक होने के कारण अरस्तु ने मध्य मार्ग के अनुसरण पर सबसे अधिक जोर दिया है अरस्तु प्रथम विचारक है जिसने राजनीति पर यथार्थवादी दृष्टिकोण से कार्य किया है अरस्तु मानता था कि विकास के मार्ग का सबसे बड़ा अवरोध असंतुलन है.

3.राज्य की पूर्ण सिद्धांत का क्रमबद्ध निरूपणः अरस्तु ही वह पहला विचारक है जिसने राज्य का पूर्ण सैद्धांतिक वर्णन किया है राज्य के जन्म और उसके विकास से लेकर उसके स्वरूप संविधान की रचना सरकार के निर्माण नागरिकता की व्याख्या कानून की सर्वोच्चता और क्रांति

ISBN: 978-93-92267-08-6

आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर उसने विस्तार से प्रकाश डाला है

4.राजनीति शास्त्र को नीतिशास्त्र से पृथक करना: अरस्तु व प्रथम विचारक है जिसने राजनीति शास्त्र को नीति शास्त्र से पृथक कर उसे स्वतंत्र स्थान प्रदान किया उसने नीति शास्त्र और राजनीति शास्त्र में अंतर किया अरस्तु के अनुसार नीति शास्त्र का संबंध उद्देश्य में जबकि राजनीति शास्त्र का संबंध उन साधनों से है जिनके द्वारा उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है

5.संविधान का वैज्ञानिक वर्गीकरण: संविधान के बारे में जितना विस्तृत अध्ययन अरस्तु की पॉलिटिक्स में मिलता है उतना अन्यत्र नहीं और उस समय जबकि दुनिया में राजनीति विचारधाराओं का उदय हो रहा था अरस्तु ने संविधान और राज्यों का वर्गीकरण किया इस वर्गीकरण के लिए समूचा राजनीति शास्त्र अरस्तु का ऋणी है.

6.नागरिकता की व्याख्या: नागरिकता का विचार अरस्तु की एक मौलिक देन है जिसके लिए राजनीति शास्त्र सदा उसका ऋणी रहेगा अरस्तु द्वारा नागरिकता की जो व्याख्या की गई है वह राजनीति शास्त्र के लिए बहुत सहायक और आधुनिक नागरिकता की परिभाषा को निर्धारित करने में मार्गदर्शक सिद्ध हुई है.

7.सरकार के अंगो का निर्धारण: अरस्तु ने इन विभिन्न शासकीय अंगों के संगठन कार्यक्षेत्र और शक्तियों के बारे में विस्तार से विचार दिया है अरस्तु कि यह खोज आगे चलकर शक्ति पृथक्करण सिद्धांत तथा नियंत्रण और संतुलन के सिद्धांत की रूपरेखा तैयार करती है इसके द्वारा ही वर्तमान समय में कार्यपालिका व्यवस्थापिका और न्यायपालिका सरकार के तीनों अंगों का निर्धारण तय हुआ .

8.कानून की सर्वोच्चता का प्रतिपादन: अरस्तु सर्वाधिक बुद्धि संपन्न व्यक्तियों के विवेक के स्थान पर परंपरागत नियमों और कानूनों की श्रेष्ठता में विश्वास विश्वास करता है अरस्तु ने कानून की सर्वोच्चता के बारे में एक समय एक विचार प्रस्तुत किया है अरस्तु का विश्वास कानून के शासन में हैं कानून की सर्वोच्च था तथा संवैधानिक था शासन की वांछनीय ता में विश्वास उसकी ऐसी धारणाएं हैं. जिनके आधार पर उसे संविधानवाद का पिता कहा जाता है अरस्तु ने कानून की सर्वोच्चता कि जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया उसमें वैज्ञानिक संप्रभुता के बीज निहित हैं. आगे चलकर ग्रेसियस बेंथम हॉप्स ऑस्टिन और लास्की ने अरस्तु की व्याख्या के आधार पर ही वैधानिक संप्रभुता की अवधारणा का प्रतिपादन किया इस प्रकार संप्रभुता की अवधारणा के लिए समाज अरस्तु का ऋणी है.

9.राजनीति पर भौगोलिक एवं आर्थिक प्रभावों का अध्ययन: अरस्तु ने राजनीति पर पढ़ने वाले भौगोलिक और आर्थिक प्रभाव को बहुत महत्व दिया है उसने इन मूलभूत तथ्यों का प्रतिपादन किया की संपत्ति का लक्ष्य और वितरण शासन व्यवस्था के रूप को निश्चित करने में निर्णय कारी तत्व होता है राज्य की समस्याएं का एक बहुत बड़ा कारण निर्धनों एवं धनी के बीच संघर्ष है यदि संपत्ति पर स्वामित्व व्यक्तिगत रहे लेकिन इसका उपयोग सार्वजनिक हो तो राज्य की समस्याएं सरलता से हल हो सकती है अरस्तु पहला राजनीतिक वैज्ञानिक है उसने राजनीति को एक पूर्ण विज्ञान का सम्मान प्रदान किया अरस्तु पूर्णता व्यवहारिक एवं यथार्थवादी राजनीतिक दार्शनिक था जिसने राजनीति को नीतिशास्त्र से अलग करके उसे एक स्वतंत्र विज्ञान का रूप प्रदान किया इस प्रकार वास्तविक अर्थों मे अरस्तु ही राजनीति विज्ञान का जनक है.

सन्दर्भ

1 *"Darwin's Ghosts, By Rebecca Stott"*. *independent.co.uk*. मूल से 5 जून 2012 को पुरालेखित अभिगमन तिथि 19 श्रनदम 2012.

2 भाषा विज्ञान, डा० भोलानाथ तिवारी, किताब महल– दिल्ली, पन्द्रहवाँ संस्करण १९८९, पृष्ठ–४८९

3 https://www.mpgkpdf.com/2021/10/aristotle-arastu-rajneeti-ka-janak.html

ISBN: 978-93-92267-08-6

16

बाल गंगाधर तिलक

विजयलक्ष्मी कुमावत एवं राधे रानी तिवारी

सहायक आचार्य ,स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय ,रूपनगढ़ ,अजमेर

प्रस्तावना–स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा। बाल गंगाधर तिलक एक भारतीय राष्ट्रीय शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और स्वतंत्रता सेनानी थे। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुए ब्रिटिश औपनिवेशिका प्राधिकारी उन्हें भारतीय अशांति के पिता कहते थे उन्हें लोकमान्य का आदरणीय शीर्षक भी प्राप्त हुआ जिसका अर्थ है लोगों द्वारा
स्वीकृत।

जीवन परिचय

पूरा नाम: केशव गंगाधर तिलक

जन्म:23 जुलाई 856 स्थान रत्नागिरी महाराष्ट्र

माता– पिता: पार्वती बाई, गंगाधर रामचंद्र तिलक

पत्नी: सत्यभामा

मृत्यु:1 अगस्त 1920

तिलक का जन्म चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता गंगाधर तिलक एक संस्कृत टीचर थे ।तिलक को बचपन से ही पढ़ाई में रुचि थी। वे गणित में बहुत अच्छे थे। तिलक जब 10 साल के थे तब उनके पिता रत्नागिरी से पुणे आ गए थे। यहां उन्होंने एंग्लो वर्नाकुलर स्कूल ज्वाइन किया और शिक्षा प्राप्त की। पुणे आने के थोड़े समय बाद ही तिलक में अपनी माता को खो दिया तथा 16 साल की उम्र में तिलक के सर से पिता का साया भी उठ गया। तिलक जब मैट्रिक की पढ़ाई कर रहे थे तब उन्होंने 10 साल की लड़की तापीबाई से शादी कर ली, जिनका नाम बाद में सत्यभामा हो गया ।मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद तिलक ने डेक्कन कॉलेज में दाखिला ले लिया जहां उन्होंने 1977 में B.A.की डिग्री फर्स्ट क्लास में पास की ।भारत के इतिहास में तिलक वह पीढ़ी थे जिन्होंने मॉडर्न पढ़ाई की शुरुआत की और कॉलेज से शिक्षा ग्रहण की इसके बाद भी तिलक ने पढ़ाई जारी रखी और LLB की डिग्री हासिल की।

लोकमान्य का राजनीतिक जीवन–ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आवाज उठाने के लिए बाल गंगाधर तिलक जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए। तिलक जी पुणे मुंसिपल सदस्य थे, इसके साथ ही मुंबई विधान मंडल के भी सदस्य रहे।

बाल गंगाधर तिलक एक महान समाज सुधारक थे उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया एवं विधवा पुनर्विवाह का समर्थन भी किया था। ब्रिटिश सरकार बाल गंगाधर तिलक जी को भारतीय अशांति के जनक संबोधित करते थे।जेल से सजा काटकर आने के बाद बाल गंगाधर तिलक जी ने स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की समाचार पत्र एवं भाषण के द्वारा वह अपनी

ISBN: 978-93-92267-08-6

बात महाराष्ट्र के गांव–गांव तक पहुंचाते थे।बाल गंगाधर तिलक बंगाल के बिपिन चंद्र पाल एवं पंजाब के लाला लाजपत राय का समर्थन करने लगे थे, यहीं से यह तीनों लाल बाल पाल के नाम से जाने लग। सन 1908 में बाल गंगाधर तिलक ने अपने समाचार पत्र में तुरंत स्वराज की बात कही, जिसके बाद उन पर राजद्रोह का आरोप लगा। इसके बाद उन्हें 6 साल की जेल हो गई तथा उन्हें बर्मा जेल भेज दिया गया पजिसे वर्तमान में म्यांमार से जाना जाना जाता है। जेल में वह बहुत सी किताबे पढ़ा करते थे तथा वही उन्होंने 'गीता रहस्य' ग्रंथ लिखा। इस बीच बाल गंगाधर की पत्नी की मौत हो गई. हालांकि अपनी पत्नी के अंतिम दर्शन ना होने पर बाल गंगाधर तिलक को जीवन भर अफसोस रहा।

बाल गंगाधर तिलक जी ने सूरत के अधिवेशन में शामिल होकर कांग्रेसमें फूट डाली थीकांग्रेस दो हिस्सो में बट गई, नरमपंथी और दूसरी गरमपंथीथी। गरम पंथी के नेतृत्व तिलक जी कर रहे थे और नरमपंथी का गोपाल कृष्ण गोखले कर रहे थे।गरम पंथी स्वशासन के पक्ष में थे जबकि नरमपथी सोचते थे कि समय अभी ऐसी स्थिति के लिए तैयार नहीं है।हम कागज, कलम और कानून के रास्ते जाएंग। दोनों एक दूसरों के विरोधी थे, लेकिन उद्देश्य एक ही था भारत की आजादी। इसी अधिवेशन में तिलक जी ने स्वदेशी का नारा लगाया। बाल गंगाधर तिलक ने दो समाचार पत्रों का निर्माण शुरू किया इसमें एक था ।केसरी जो मराठी में साप्ताहिक पत्र था इसके संपादन गोपाल गणेश आगरकर जी थे, दूसरा था मराठा,यह अंग्रेजी का साप्ताहिक समाचार पत्र था।इसके संपादक खुद बाल गंगाधर तिलक थे।समाचार पत्र में तिलक जी भारत में चल रही ब्रिटिश सरकार के अन्याय और हुकुम शाही के खिलाफ खबर लिखते थे।

तिलक की रचनाएं

ओरियन दी आर्टिकल होम इन दी वेदास/गीता रहस्य/डोंगरीचा तुरंग तिल आमचे

तिलक का शिक्षा दर्शन–इन्होंने भारतीय और राष्ट्रीय शिक्षा का समर्थन किया। उनका मानना था कि प्रत्येक देश की शिक्षा का स्वरूप उस देश की समाज और संस्कृति के अनुरूप तय किया जाना चाहिए ।बाल गंगाधर के अनुसार शिक्षा का कार्य तथा उद्देश्य केवल साक्षरता प्रदान करना नहीं है बल्कि हमारे प्राचीन ज्ञान व सांस्कृतिक मूल्य को समाज की नवीनतम और युवा पीढ़ी के विचारों और जीवन शैली में समाहित कर ऐसा परिवर्तन लाना है जिससे हमारे समाज और राष्ट्र का जागरण और पुनर्निर्माण संभव हो सके। शिक्षा एक और मनुष्य के भौतिक जीवन यापन में सहायक हो और दूसरी और राष्ट्र की प्रतिष्ठा और सपन्नता में वृद्धि का कारक भी हो। शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह मात्र नहीं अपितु ज्ञान प्राप्ति का मार्ग तथा माध्यम है। तिलक का मानना था कि केवल तथ्योंकी जानकारियों का संग्रह कर लेना तथा पढना लिखना बोलना सीख लेना ही शिक्षा नहीं ह। शिक्षा अनुभवों का पुरानी पीढ़ी से नई पीढी को स्थानांतरण है जो विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करती है। शिक्षा में जीवन परिवर्तन करने की क्षमता होती है जो शिक्षार्थियो की कार्य करने की समाज को समझने की राष्ट्रीय की चिंता और आवश्यकताओं को समझ कर उस अनुरूप कार्य करने में सामर्थ्य को विकसित करती है। शिक्षा का ज्ञान प्राप्ति के उस मार्ग का नाम है जो हमें भारतीय दृष्टि से जीवन के शाश्वत लक्ष्य मुक्ति की ओर ले जाता है।

1 मातृभाषा मे शिक्षा पर बल

2 व्यवसायिक व तकनीकी शिक्षा को पाठ्यक्रम मे उचित स्थान

3 शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य चरित्र निर्माण

4 भारतीय संस्कृति मूल्य तथा महापुरुषो को पाठ्यक्रम मे स्थान

5 जन जागरण राष्ट्रीयता के विकास के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी हो

6 भारत की शिक्षा की प्रकृति भारतीय प्रकृति हो

ISBN 978-93-92267-08-6

विनोबा भावे : अहिंसा और मानवाधिकार के भारतीय वकील

19

सुमन कुमारी एवं सविता शर्मा

सहायक आचार्य ,स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय ,रूपनगढ़ ,अजमेर

सारांश

आचार्य विनोबा भावे भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सामाजिक कार्यकर्ता तथा प्रसिद्ध गांधीवादी नेता थे उनका मूल नाम विनायक नरहरि भावे था उन्हें भारत का राष्ट्रीय अध्यापक और महात्मा गांधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी समझा जाता है द्वितीय विश्व युद्ध के समय यूनाइटेड किंगडम द्वारा भारत देश को जबरन युद्ध में झोंका जा रहा था जिसके विरुद्ध एक व्यक्तिगत सत्याग्रह 17 अक्टूबर 1940 ईस्वी को शुरू किया गया था इसमें गांधी जी द्वारा विनोवा को प्रथम सत्याग्रह बनाया गया था भूदान आंदोलन संत विनोबा भावे द्वारा सन 1951 ईसवी में आरंभ किया गया स्वैच्छिक भूमि सुधार आंदोलन था विनोवा की कोशिश थी कि भूमि का पुनर्वितरण सिर्फ सरकारी कानूनों के जरिए नहीं हो बल्कि एक आंदोलन के माध्यम से इसकी सफल कोशिश की जाए।उन्होंने सर्वोदय समाज की स्थापना की यह रचनात्मक कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय संघ था।इसका उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके से देश में सामाजिक परिवर्तन लाना था।

प्रस्तावना :

आचार्य विनोबा भावे का नाम भारत के महात्माओं के नामों के बीच अंकित है। यह मानवाधिकार की रक्षा और अहिंसा के लिए हमेशा कार्यरत रहे विनोबा महात्मा गांधी के अग्रणी शिष्यों में से एक थे जिन्होंने सदैव महात्मा गांधी के मार्ग का अनुसरण किया तथा अपना जीवन राष्ट्र निर्माण में लगाया।

जीवन परिचय :

जन्म : 11 सितंबर 1895 ईस्वी को गागो दीपेन जिला रायगढ़ भारत वर्ष

मूल नाम : विनायक नरहरि भावे था।

प्रसिद्धि कारण : भूदान आंदोलन

पुरस्कार : अंतरराष्ट्रीय रेमन मैग्सेसे पुरस्कार 1958, भारत रत्न 1983

बचपन :

बचपन में बहुत कुशाग्र बुद्धि थे गणित उनका प्रिय विषय था कविता और आध्यात्मिक चेतना के संस्कार मां से मिले उन्हीं से जड़ और चेतन दोनों को समान दृष्टि से देखने का बोध जागा मां बहुत कम पढ़ी लिखी थी लेकिन उन्होंने विनोबा को बहुत अच्छी शिक्षा दी।

विनोबा भावे के विचार

जब तक कष्ट सहने की तैयारी नहीं होती तब तक लाभ दिखाई नहीं देता। :लाभ की इमारत कष्ट की धूप में ही बनती है।

ISBN: 978-93-92267-08-6

- मनुष्य जितना ज्ञान में घुल गया हो उतना ही कर्म के रंग में रंग जाता है।
- स्वतंत्र वही हो सकता है जो अपना काम अपने आप कर लेता है।
- विचार को को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है दुनिया उस पर कल अमल करती हैं।
- केवल अंग्रेजी सीखने में जितना श्रम करना पड़ता है उतने श्रम में भारत की सभी भाषाएं सीखी जा सकती है।
- जिसने नई चीज की आशा छोड़ दी वह बुढा है।
- संघर्ष और उथल–पुथल के बिना जीवन बिल्कुल नीरस हो जाएगा इसलिए इनसे घबराए नहीं।
- ऐसा व्यक्ति जो 1 घंटे का समय बर्बाद करता है उसने अपने मूल्य को समझा ही नहीं है।
- प्रेरणा किसी कार्य को आरंभ करने में सहायता करती है और आदत उस कार्य को जारी रखने में सहायता करती हैं ।

विनोबा भावे के शिक्षा से संबंधित विचार

आचार्य विनोबा भावे जी केवल नाम की ही संत नहीं थे अपितु उन्होंने तत्कालीन भारतीय शिक्षा को उपयोगी बनाने पर बल दिया है उनकी धारणा थी कि जब तक बालक में सामाजिकता एवं त्याग की भावना का विकास नहीं होगा तब तक वे समाज के विकास में अपना सक्रिय योगदान नहीं दे सकेंगे। विनोबा भावे के शिक्षा के बारे में गहन विचार जैसे शिक्षक को छात्र उन्मुख होना चाहिए और छात्रों को शिक्षक उन्मुख होना चाहिए दोनों ज्ञान उन्मुख होने चाहिए और ज्ञान सेवा उन्मुख होना चाहिए या ग्रंथों में ऐसे शब्द होते हैं , जिन का अर्थ जीवन में महसूस होता है शब्द के सभी अर्थों में दार्शनिक विचार की आवश्यकता होती है। विनोबा जी ने शिक्षा को एक आंतरिक क्रिया माना है बाह्य ज्ञान नहीं वे शिक्षा का उद्देश्य बालक को उत्तम संस्कार देने के साथ–साथ शरीर मन आत्मा का विकास मानते थ। सामाजिक विकास सभी व्यक्तियों का विकास आर्थिक स्वावलंबन का विकास जीवन जीने की कला का विकास आध्यात्मिक विकास उनके शैक्षिक उद्देश्य थे।

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका

गांधीजी के प्रभाव में आकर विनोबा भावे ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया तथा असहयोग आंदोलन में भी भाग लिया । वह खुद भी चरखा कातते थे और दूसरों से भी ऐसा करने की अपील करते थे विनोबा भावे की स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी से ब्रिटिश शासन आक्रोशित हो गया। गांधीजी के असहयोग आंदोलन के चलते विनोबा ने 1920 से 1930 ईस्वी तक अनेकों बार जेल की यात्रा की । 1922 ईस्वी में विनोबा जी ने नागपुर में झंडा सत्याग्रह किया और ब्रिटिश शासकों ने उन्हें जेल में डाल दिया । इस समय उन पर धारा 103 के अंतर्गत गिरफ्तार किया गया था । जिसमें समाज के असामाजिक और गुंडागर्दी फैलाने वाले लोग जेल जाते हैं । जेल प्रशासन ने उन्हें इस समय पत्थर तोड़ने का काम दिया जिसे उन्होंने हर्ष के साथ स्वीकार किया।

विनोबा और सविनय अवज्ञा आंदोलनः 5 वर्ष की जेल यात्रा ने आंदोलनकारी विनोबा को और अधिक दृढ़ निश्चय वाला बना दिया गांधीजी ने उन्हें सविनय अवज्ञा आंदोलन की बागडोर थमा दी जिसका उन्होंने पूरे मन से पालन किया।

अहिंसक आंदोलनकारी : विनोबाजी की पहचान एक अहिंसक आंदोलनकारी के रूप में है जिसका धर्म मानवाधिकार की रक्षा व हिंसा था महात्मा गांधी किस शिष्यों में सबसे आगे रहने वाले विनोबा को लोग महात्मा व आचार्य के नाम से जानते हैं।

ISBN: 978-93-92267-08-6